भजन

तर्ज–तेरी गलियों में न रखेंगे कदम

मोमिन की कुर्बानी का आया समां,हो जा फना
हक अपने सिर पर खड़े निगेहबां,हो जा फना

1– माया की खातिर जो बीता वक्त वो सपना है
राहे हक में जो भी कदम बढ़ा वो अपना है
हम तुम को नहीं रहना हमेशां यहाँ,हो जा फना

2– मोमिन हर अंग से फनां होते हक की खातिर
चौदह तबक को पीठ दे देते हक की खातिर
हक चरणों बिन उनको कहीं चौन कहाँ,हो जा फना

3– कुर्बानी की राहों पर न चल सकती दुनियां
बिन मोमिन के कौन हो सकता हक पे कुर्बान
जीते जी मर जायेंगे मोमिन यहाँ,हो जा फना